सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण नं A

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

गद्य-शिक्षण

गद्य का महत्त्व

गद्य और पद्य में पहले किसका प्रादुर्भाव हुआ, यह कहना कठिन है। पंडित करुणापति त्रिपाठी का कथन इस सन्दर्भ में ध्यान देने योग्य है। वे कहते हैं, "इस भाँति नर-समाज ने पहले गद्य-साहित्य का आविष्कार किया होगा, परन्तु गद्य-साहित्य से उसकी पूर्ण पुष्टि न हो सकी। अतः प्रभावोत्पादकता और रमणीयता की अभिवृद्धि करने के विचार से मनुष्य ने अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति में संगीत तत्त्व का सम्मिश्रण कर उसे 'कविता' नाम दिया। संगीत तत्त्व से अनुप्राणित साहित्य का यह रूप इतना लोकप्रिय हो गया कि इसके सामने गद्यात्मक आख्यायिका आदि का साहित्य गौण हो गया। फलतः आज हम संसार के सभी प्राचीन साहित्यों में पद्य की ही प्रचुरता पाते हैं।"[1]

भामह ने काव्यालंकार में गद्य को "प्रकृत अनाकुल श्रव्य शब्दार्थ पदवृत्ति" कहा है। कुछ विचारक गद्य और पद्य की भाषा में कोई अन्तर नहीं मानते, किन्तु दोनों में कुछ अन्तर अवश्य है। पद्य साधारणतः छन्दोबद्ध रचना होती है। कुछ विचारकों की दृष्टि में गद्य और पद्य का भेदक तत्त्व छन्द है। नई कविता छन्द से मुक्त है, किन्तु वहाँ भी लय, गति, प्रवाह, स्वराघात, संगीत, अर्थ की लय, अनुभूति आदि तो विद्यमान रहते ही हैं।

प्रसिद्ध समालोचक डी० डब्ल्यू० रेनी का कहना है कि कविता बौद्धिक सृजन करती है, गद्य बौद्धिक निर्माण करता है।[2] हरबर्ट रीड के अनुसार भी कविता सृजनात्मक अभिव्यक्ति (क्रियेटिव एक्सप्रेशन) है और गद्य निर्माणात्मक अभिव्यक्ति (कन्स्ट्रक्टिव एक्सप्रेशन)।[3] सृजन नूतनता की उद्‌भावना है और निर्माण पहले प्राप्त वस्तुओं में व्यवस्था लाना है। भवन का नक्शा तैयार करना सृजन है, ईंट, चूना, गारा आदि को व्यवस्थित करना निर्माण।

गद्य शब्द संस्कृत भाषा की 'गद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है—स्पष्ट कहना। साहित्य-दर्पण के अनुसार 'वृत्त वंधोज्झितं गद्यजे' अर्थात् वृत्त-बन्ध-हीन रचना गद्य है। काव्यादर्श के अनुसार 'अपादः पदसंतानो गद्यजे' अर्थात् पद समुदाय में गण-मात्र आदि के निपत पाद का न होना गद्य है। अंग्रेजी में गद्य को 'प्रोज़' कहते हैं। प्रोज़ की परिभाषा यों की गई है—'स्टेट, डाइरेक्ट, अनएडार्न्ड स्पीच' अथवा लैंग्वेज स्पोकन ऑफ रिटन, ऐज इन आर्डिनरी यूसेज, विदाउट मीटर ऑफ राइम'। अरबी में गद्य को नस्र या 'इबारत' या 'नज्म का उल्टा' कहा गया है। उर्दू में भी अरबी के अनुसार ही गद्य को स्पष्ट किया गया है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में गद्य का स्थान महत्त्वपूर्ण है। 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' उक्ति के अनुसार गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया है। काव्य में अलंकार, पिंगल आदि के रूपों में कवियों के समक्ष कुछ मार्गदर्शक तत्त्व होते हैं, किन्तु गद्य में इनका होना आवश्यक नहीं है। गद्य-रचना में लेखक स्वतन्त्र रहता है। स्वतन्त्र होने के नाते उसे बहुत सावधान भी रहना पड़ता है। काव्य में भाषा-सम्बन्धी भूल को यह मानकर स्वीकार कर लिया जाता है कि लय एवं भाव की दृष्टि से व्याकरण पर कवि का ध्यान नहीं गया, किन्तु गद्य में लेखक को व्याकरणिक त्रुटि के लिए क्षमा नहीं किया जाता और उसे उसका दोष घोषित कर दिया जाता है।

आज ज्ञान की प्रत्येक शाखा में विषय का विस्तार होता जा रहा है। बीसवीं शताब्दी में ज्ञान का विकास बड़ी द्रुत गति से हो रहा है। साहित्य के क्षेत्र में भी कहानी, उपन्यास, निबन्ध, लेख आदि प्रचुर मात्रा में रचे

1. **पंडित करुणापति त्रिपाठी** : *शैली*, पृष्ठ 12-13।
2. **D. W. Rannie :** *The Elements of Style*, page 11.
3. **Herbert Read :** *English Prose Style*, page X-XI.

Scanned with CamScanner

जा रहे हैं। इन विषयों का माध्यम काव्य नहीं हो सकता। इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, विज्ञान आदि का माध्यम गद्य ही होता है। कहानी, नाटक, उपन्यास, लेख आदि भी गद्य में ही रचे जा रहे हैं। गद्य के ही माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से गद्य का शिक्षण भाषा-शिक्षण का आवश्यक अंग बन जाता है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण नं A

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

अपठित गद्य-पाठ

अपठित गद्य-पाठ वह गद्यांश है जो छात्र की पाठ्य-पुस्तक से सम्बन्ध नहीं रखता। नियमित रूप से गद्य-पाठ पढ़ते-पढ़ते छात्र का ज्ञान कितना बढ़ा है इसकी जाँच के लिए प्रायः ऐसा गद्य-पाठ दिया जाता है जिसे छात्र ने पढ़ा न हो। अपठित गद्य को पढ़कर समझना छात्र के ज्ञान का सूचक है। इससे छात्र की तर्क शक्ति और विवेचन शक्ति बढ़ती है।

अपठित गद्यांश को छात्र को ध्यानपूर्वक पहले पढ़ना चाहिए। उसके पश्चात् उस पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए। प्रमुख रूप से चार बातें प्रायः पूछी जाती हैं जो निम्नलिखित हैं—

(1) उपयुक्त शीर्षक लिखना,

(2) पाठ का सारांश लिखना,

(3) रेखांकित अंशों की विवेचना करना,

(4) गद्यांश के आधार पर निर्मित प्रश्न।

गद्य-पाठों पर प्रायः निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं—

(1) निम्नलिखित या अधोलिखित या अग्रलिखित या उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

(2) गद्यांश या गद्य खण्ड का अर्थ लिखिए, स्पष्टार्थ लिखिए, भावार्थ लिखिए, सारांश लिखिए, तात्पर्य लिखिए।

(3) सन्दर्भ सहित या प्रसंग सहित या ससन्दर्भ या सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(4) चिन्हित, कोष्ठांकित, पुष्पांकित या रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(5) रेखांकित शब्दों के तत्सम, तद्भव, समानार्थक, एकार्थक, पर्यायवाची या विलोमार्थक रूप लिखिए।

(6) पुष्पांकित अंश की पद-व्याख्या, पद परिचय या पद-विश्लेषण करिये।

(7) चिन्हित वाक्य का वाक्य-विश्लेषण या वाक्य-विग्रह या वाक्य-व्याख्या कीजिए।

(8) रेखांकित अंश से सम्बद्ध गुप्तकथा या अन्तर्कथा लिखिए।

Scanned with CamScanner

अपठित गद्य-पाठ का उद्देश्य अध्येता के क्षेत्र को व्यापक बनाना, पुस्तकालय व वाचनालय का प्रयोग कराना, व्याकरण की ओर सचेत करना, भावार्थ को सरलता से समझना, मुहावरों, लोकोक्तियों, अलंकारों का ज्ञान देना तथा सारांश लेखन की कला का विकास करना है। अतः कक्षा में यदा-कदा अध्यापक को अपठित गद्य-पाठ का अभ्यास कराना चाहिए।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण ने A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और द्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

हिन्दी-गद्य का विकास

आधुनिक हिन्दी-गद्य का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम दशाब्द में हुआ। उसके पहले हिन्दी में गद्य बहुत ही थोड़ा था और जो कुछ था भी, वह ब्रजभाषा में, साहित्य की वर्तमान भाषा खड़ी बोली में नहीं। जन्म के उपरान्त आधुनिक गद्य के विकास की गति पचास वर्ष तक अत्यन्त मंद रही, लेकिन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साहित्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होने पर उसकी धारा में वेगपूर्ण प्रवाह आ गया। विषय तथा शैली दोनों की विविधता के विचार से भारतेन्दु तथा उनके समकालीन लेखकों ने गद्य की विषय उन्नति की; लेकिन शैली में प्रौढ़ता तथा भाषा में परिष्कार का काम बीसवीं शताब्दी में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा उनके समकालीन और परवर्ती लेखकों द्वारा पूरा हुआ। इस तरह से आधुनिक हिन्दी-गद्य के विकास का इतिहास पिछले सौ वर्षों का इतिहास है। यद्यपि अभी हमारा गद्य-साहित्य पद्य के समान समृद्ध नहीं, फिर भी जिस द्रुत गति से उसकी उन्नति हो रही है, वह एक अत्यन्त उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। हिन्दी के राष्ट्रभाषा स्वीकृत होने तथा एक विस्तृत भू-भाग में शिक्षा का माध्यम चुने जाने का कारण गद्य के सब स्वरूपों की रचना तत्परता और वेग से हो रही है। आवश्यकतानुसार गम्भीर से गम्भीर बौद्धिक तथा वैज्ञानिक विषयों के विवेचन के लिए पारिभाषिक शब्दावली तथा उपयुक्त शैली का निर्माण हो रहा है। ललित साहित्य के विभिन्न रूप—नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध आदि सबका भण्डार भरा जा रहा है। साहित्य के निरन्तर विकास का यह एक शुभ लक्षण है।

निबन्ध गद्य का एक प्रमुख अंग है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। 'कुछ नहीं' से लेकर विश्व की सब वस्तुओं, भावों और क्रियाओं पर निबन्ध लिखे जा सकते हैं। विषय और शैली की दृष्टि से उनके अनेक भेद और प्रभेद हो सकते हैं। सामान्यतः शैली की दृष्टि से निबन्ध के चार बड़े वर्ग माने जाते हैं—

(1) वर्णनात्मक,
(2) विवरणात्मक,
(3) विचारात्मक,
(4) भावात्मक।

इनमें अन्तिम दो की महत्ता विशेष रूप से मान्य है। विचार-प्रधान निबन्ध मस्तिष्क की वस्तु है, भावात्मक हृदय की। पहले में तर्क का विशेष आश्रय लिया जाता है तथा दूसरे में राग और कल्पना-तत्त्व का। शैली तत्त्व दोनों में ही समान रूप से वर्तमान रहता है। शैली-भेद के विचार से विचारात्मक निबन्ध समास और व्यास शैलियों में लिखे जाते हैं; उदाहरण के लिए—पं० रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध समास शैली के हैं और बाबू श्यामसुन्दर दास के व्यास शैली के। इसी प्रकार भाषात्मक निबन्ध धारा और विक्षेप शैलियों में लिखे जाते हैं। धारा शैली में भावों की धारा प्रवाहमय रहकर प्रायः एक गति से चलती है, लेकिन विक्षेप शैली में वह कुछ-कुछ उखड़ी हुई रहती है और कहीं मन्द गति से प्रवाहित होती है तो कहीं तीव्र गति से। सरदार पूर्णसिंह के निबन्ध धारा शैली के उदारहण हैं। डॉ० रघुवीरसिंह के 'ताज' में विक्षेप शैली के दर्शन होते हैं।

भावात्मक निबन्ध से मिलता-जुलता होने पर भी 'गद्य-काव्य' का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। दोनों में भावों की प्रधानता होती है, लेकिन गद्य-काव्य में वैयक्तिकता और एकतथ्यता अधिक होती है, एक ही केन्द्रीय भावना का प्राधान्य होने के कारण वह आकार में छोटा होता है और विभिन्न तत्त्वों की अन्विति भी कुछ अधिक होती है। गद्य-काव्य की भाषा गद्य की होती है, लेकिन भाव गीति-काव्य के। भाषा प्रवाह वेगपूर्ण, सरस और संगीतमय होता है। इसमें रूपकों और अन्योक्तियों का प्राधान्य होता है। रबीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' के गीत इसी कोटि के हैं। हिन्दी में गद्य-काव्य के कुछ उदाहरण ये हैं—साधना (रायकृष्ण दास), अन्तर्नाद (वियोगी हरि), अंतस्तल (चतुरसेन शास्त्री), साहित्य देवता (माखनलाल चतुर्वेदी), मौक्तिक माल (दिनेश नन्दिनी डालमिया) इत्यादि।

हिन्दी-गद्य का एक अंग जीवनी है। घटनाओं के ऐतिहासिक ब्यौरे से पूर्ण जीवनियाँ तो बहुत लिखी गयी हैं लेकिन व्यक्तित्व का विश्लेषण और मूल्यांकन करने वाले जीवन चरित्र बहुत थोड़े हैं।

हिन्दी आत्मकथा लिखने का चयन कुछ ही वर्षों से चला है। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, श्री वियोगी हरि प्रभृति विद्वानों के आत्म-चरित्र बड़े सुन्दर निकले हैं, जिससे आशा होती है कि

Scanned with CamScanner

भविष्य में हमारे साहित्यकार इस ओर अग्रसर होंगे। बाबू गुलाबराय ने 'मेरी असफलताएँ' नाम से अपने कुछ आत्मकथात्मक स्फुट लेखों का संग्रह प्रकाशित किया था।

आत्मकथा के समान ही हिन्दी में संस्मरण लिखने की परम्परा का जन्म बीसवीं शताब्दी में ही हुआ है। पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, पं० श्रीराम शर्मा, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी इत्यादि संस्मरणों के प्रमुख लेखक हैं।

यात्रा-वर्णन भी गद्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। गद्य के इस रूप के वर्णन भी हिन्दी में अपेक्षाकृत कम ही हैं। 'पृथ्वी प्रदक्षिणा', 'मेरी यूरोप यात्रा' जैसी गिनी-चुनी पुस्तकें ही उपलब्ध हैं।

हास्य-व्यंग्य की रचनाएँ किसी भी साहित्य की आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण अंग होती हैं लेकिन परिहास और व्यंग्य लिखना एक दुष्कर कार्य है। इसके लिए लेखक में एक विशेष सजीवता की आवश्यकता होती है। साथ ही भाषा और शैली पर पूर्ण अधिकार भी अपेक्षित है। भारतेन्दु काल के लेखक इस दृष्टि से बहुत सफल थे। कहना न होगा कि अन्नपूर्णानन्द, श्री बेढब बनारसी, श्री हरिशंकर परसाई, पं० हरिशंकर शर्मा, डॉ० आत्मानन्द मिश्र आदि उच्चकोटि के हास्य रस के लेखकों के होते हुए भी इस क्षेत्र में अभी अभाव ही अभाव है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण – 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

अपठित गद्य-पाठ का उद्देश्य अध्येता के क्षेत्र को व्यापक बनाना, पुस्तकालय व वाचनालय का प्रयोग कराना, व्याकरण की ओर सचेत करना, भावार्थ को सरलता से समझना, मुहावरों, लोकोक्तियों, अलंकारों का ज्ञान देना तथा सारांश लेखन की कला का विकास करना है। अतः कक्षा में यदा-कदा अध्यापक को अपठित गद्य-पाठ का अभ्यास कराना चाहिए।

गद्य की पाठ्य-पुस्तक

गद्य में प्रायः उन विषयों को लिया जाता है जिनका सम्बन्ध चिन्तन से होता है। वर्णन, तर्क, कहानी, बोध, व्याख्या, संस्मरण एवं संवाद का शक्तिशाली माध्यम गद्य है। इसका कुछ भाग भावात्मक भी है जिसमें भावुकता की प्रधानता होती है। अतः कहा जा सकता है कि गद्य की पाठ्य-पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में पठन की योग्यता का विकास करना है जिससे वे भविष्य में वस्तु-बोध करने एवं विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ हो सकें।

उच्चतर माध्यमिक कक्षा की प्रमुख क्रियाएँ हैं—पढ़ना और लिखना। पाठन के कौशल के विकास के साथ-साथ लेखन-कौशल भी विकसित होता चलता है। गद्य के पाठों के द्वारा इस स्तर पर मौन-पठन के कौशल का विशेष रूप से विकास करता है। पढ़ने में अर्थ का बोध करना, शब्द-भण्डार में वृद्धि करना एवं पठन-गति का विकास करना निहित है।

गद्य की पाठ्य-पुस्तक का दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह होना चाहिए कि छात्रों को हिन्दी गद्य के विकास की प्रमुख धाराओं से परिचित करा दिया जाये। इसके लिए गद्य के विकास के प्रमुख कालों का पाठ्य-पुस्तक में प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

यह भी देखना है कि गद्य के विषय कौन-से हों। ये विषय निम्नलिखित से सम्बद्ध हो सकते हैं—

(1) सभ्यता और संस्कृति।
(2) भौगोलिक विषय।
(3) वैज्ञानिक अन्वेषण।
(4) प्राकृतिक दृश्य, पर्व, तीर्थ आदि का वर्णन।
(5) मनोभाव—उत्साह, क्रोध, श्रद्धा, भक्ति आदि।
(6) साहित्य—स्वरूप, महत्त्व आदि।
(7) जीवनी और आत्मकथा।
(8) शिक्षा—उद्देश्य, स्वरूप आदि।
(9) दर्शन—जीवन और दर्शन, सत्य और अहिंसा, सर्वोदय आदि।

विधाओं की दृष्टि से गद्य संकलन में निम्नलिखित विधाएँ हों तो अधिक अच्छा रहेगा—

(1) **निबन्ध**—जिनका विभाजन शैली की दृष्टि से इस प्रकार हो सकता है—
  (क) कथात्मक,
  (ख) वर्णनात्मक,
  (ग) विचारात्मक,
  (घ) भावात्मक।

(2) **गद्य-काव्य**—भावात्मक निबन्ध से मिलता-जुलता होने पर भी गद्य-काव्य का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। अतः एक-दो पाठ गद्य-काव्य के हो सकते हैं।

(3) **आत्म-कथा।**

(4) **संस्मरण।**

(5) **यात्रा-वर्णन**—वर्णनात्मक निबन्ध में एक पाठ यात्रा-वर्णन का भी हो सकता है।

(6) **रिपोर्ताज।**

(7) **हास्य-व्यंग्य।**

(8) **जीवनी**—कथात्मक निबन्ध में एक पाठ जीवनी का हो सकता है अथवा पृथक् से एक पाठ हो सकता है।

(9) **रेखाचित्र।**

(10) **समीक्षा**—विचारात्मक निबन्धों में एक-दो पाठ साहित्य, शिक्षा अथवा राजनीति की समीक्षा पर हो सकता है।

Scanned with CamScanner

(11) ललित निबन्ध—भावात्मक निबन्ध के अन्तर्गत एक पाठ ललित निबन्ध का होना चाहिए।

पुस्तक के प्रारम्भ में गद्य-साहित्य के विकास का विवेचन होना चाहिए और अन्त में व्याख्या में सहायक टिप्पणियाँ हों। क्लिष्ट शब्दों के अर्थ, मुहावरे तथा लोकोक्तियों का स्पष्टीकरण हो। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न हों।

गद्य-संकलन के तैयार करने में विषयों के क्रम से पहले चलें और फिर बाद में यह भी देख लिया जाय कि प्रमुख गद्यकारों की कृतियों का तथा प्रमुख कालों का प्रतिनिधित्व हो गया या नहीं।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण ने A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

कि प्रयु ... [illegible] ... हो गया या नहीं।

शिक्षण-विधि

गद्य के अन्तर्गत कुछ पाठ द्रुत-पाठ के रूप में अध्यापन हेतु होते हैं। ये पाठ प्रायः कहानी के रूप में होते हैं और इन पाठों की शिक्षण-विधि पर यहाँ विचार नहीं किया जा रहा है। कुछ अन्य पाठ संवाद की शैली में लिखे होते हैं और उनका शिक्षण भी अन्य विधि से होना चाहिए। यहाँ पर उन पाठों के विषय में विचार कर रहे हैं जो गम्भीर अध्यापन के निमित्त लेख या निबन्ध के रूप में लिखे होते हैं और जो प्रायः सूचनात्मक, वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक और चरित्र निर्माणात्मक होते हैं अथवा वैज्ञानिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक विषयों पर आधारित होते हैं।

प्रस्तावना—गद्य-शिक्षण का प्रारम्भ करने का प्रथम सोपान हमारे समक्ष प्रस्तावना का होता है। प्रस्तावना के लिए हम प्राथमिक कक्षाओं में वार्तालाप से प्रारम्भ कर सकते हैं। कोई कहानी भी संक्षेप में सुनाई जा सकती है। निम्न माध्यमिक कक्षाओं में भी वार्तालाप या कहानी के माध्यम से प्रस्तावना हो सकती है। इस स्तर पर सम्बद्ध विषय पर प्रश्न भी किये जा सकते हैं। प्रश्नों के अतिरिक्त लेखक के परिचय से भी प्रस्तावना हो सकती है। प्रस्तावना के पश्चात् पाठ के उद्देश्य से छात्रों को परिचित करा देना चाहिए।

वाचन—प्रस्तावना व उद्देश्य-कथन के पश्चात् अध्यापक द्वारा उचित आरोह-अवरोह का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण सहित विरामादि चिन्हों का ध्यान रखते हुए प्रभावपूर्ण ढंग से आदर्श वाचन किया जाता है।

आदर्श वाचन के पश्चात् छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करवाना चाहिए। कुछ छात्र सस्वर वाचन करें और अध्यापक के आदर्श वाचन के समान शुद्ध उच्चारण करने का प्रयास करें।

जिस समय अध्यापक आदर्श वाचन करे अथवा कतिपय छात्र अनुकरण वाचन करें, शेष अपनी पुस्तक को देखते हुए मौन रूप से वाचन करते रहें।

समस्त छात्र मौन रूप से वाचन उस समय करें, जब कठिन शब्दों की व्याख्या हो जाय।

प्राथमिक कक्षाओं में कभी-कभी अनुवाचन की भी आवश्यकता पड़ सकती है। जब किसी कठिन गद्य-खण्ड के वाचन में छात्र कठिनाई का अनुभव कर रहे हों तो अध्यापक एक पंक्ति का पुनः आदर्श वाचन करे और समस्त छात्र उस पंक्ति का एक साथ वाचन करें। इससे कमजोर छात्र भी वाचन करने के लिए उत्साहित होंगे। बाद में व्यक्तिगत रूप से अनुकरण वाचन कराया जाय।

आदर्श वाचन एवं अनुकरण वाचन के पश्चात् कभी-कभी बोध परीक्षा के लिए प्रश्न किये जाते हैं। वाचन के पश्चात् गद्य-खण्ड के भाव को छात्र कुछ समझ सके या नहीं, इसके लिए दो-एक प्रश्न कर लिये जाते हैं, ताकि आगे काठिन्य-निवारण के लिए अध्यापक को यह पता हो जाय कि छात्रों ने कितना समझा और उनकी कठिनाई के मुख्य स्थल कौन-से हैं। बोध-परीक्षा के प्रश्न कुछ अध्यापक नहीं करते। यदि अध्यापक कक्षा के स्तर से पूर्णरूपेण परिचित है और छात्रों की कठिनाई का सफलतापूर्वक पूर्वानुमान लगा सकता है तो बोध-परीक्षा आवश्यक नहीं है।

काठिन्य-निवारण—वाचन के पश्चात् गद्य-शिक्षण का मुख्य भाग काठिन्य-निवारण आता है। प्रत्येक गद्य-पाठ में कुछ कठिन शब्द होते हैं। इन कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। कुछ प्रमुख प्रविधियाँ आगे दी जा रही हैं, जिनके माध्यम से प्राथमिक व माध्यमिक कक्षाओं में कठिन शब्दों का अर्थ बताया जा सकता है—

(1) **चित्र दिखाकर**—जैसे—शर, चाप, पंकज शब्दों का अर्थ वाण, धनुष और कमल के फूल का चित्र दिखाकर समझाया जा सकता है।

(2) **प्रतिमूर्ति दिखाकर**—मीनाक्षी, अजन्ता, एलोरा आदि का मॉडल दिखाया जा सकता है।

(3) **रेखाचित्र द्वारा**—यदि अध्यापक का श्यामपट कार्य अच्छा है तो वह भाजन, गज, बक आदि शब्दों का अर्थ बताने के लिए श्यामपट पर रेखाचित्र बना सकता है।

Scanned with CamScanner

(4) मानचित्र द्वारा—कोसल, मगध, प्रायद्वीप आदि शब्दों को समझाते समय मानचित्र का आश्रय लिया जा सकता है।

(5) प्रत्यक्ष पदार्थ द्वारा—बीज, लिली, गुलदाउदी आदि शब्दों का अर्थ बताने के लिए प्रत्यक्ष रूप से पदार्थ दिखाया जा सकता है। यहाँ पर ध्यान रहे कि पालतू जानवरों को नहीं ले जाना चाहिए या किसी ऐसे पदार्थ को नहीं ले जाना चाहिए, जिससे कक्षा में तमाशा होने लगे।

(6) संकेत द्वारा—शीश, हस्त आदि शब्दों का अर्थ इनकी ओर कक्षा में संकेत करके बताया जा सकता है। यहाँ पर ध्यान रहे कि गुप्तांगों की ओर संकेत वर्जित है।

(7) अभिनय द्वारा—पधारना, निष्कासन आदि शब्द तदनुकूल क्रिया द्वारा समझाये जा सकते हैं।

(8) पर्याय-कथन—जैसे—कर, वसुन्धरा, सूर्य आदि का पर्याय दिया जा सकता है। अनेक शब्द देखने में पर्याय से लगते हैं किन्तु उनमें से प्रत्येक का अपना विशेष अर्थ होता है। बहुत और अधिक पर्याय है किन्तु भावात्मक वाक्य में 'अधिक' और संख्यावाचक वाक्य में प्रायः 'बहुत' का प्रयोग होता है। भीगा और गीला पर्याय है, किन्तु भीगा का प्रयोग सजीव के लिए और दोनों का प्रयोग निर्जीव के लिए हो सकता है। ठीक और सही पर्याय हैं पर सही का प्रयोग गलत के विलोम के अर्थ में और ठीक का प्रयोग उचित के अर्थ में होता है।

(9) विलोम-कथन—भाषा में इनकी बहुत महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। विलोम का अर्थ भी परम्परा के अनुसार उल्टा अर्थ नहीं है, बल्कि दो शब्दों के संबंधों का विश्लेषण है, जिनमें वे हर किसी शब्द से भिन्न होना चाहते हैं। माँ-बाप, आया-गया आदि शब्दों में ध्रुवीय संबंध दिखायी पड़ता है। शेष दो प्रकार के विलोम तुलना और निषेध के हैं। दूर-पास का, बड़े-छोटे का भेद तुलनात्मक है, वस्तुसापेक्ष है। निषेधात्मक विलोम प्रायः तुलना नहीं दिखाता। 'धन नहीं' का अर्थ 'गरीबी' नहीं होता और 'गरीब नहीं' का अर्थ 'अमीरी' नहीं है।

किसी-किसी संदर्भ में विलोम शब्द भी, पर्यायों की तरह विशेष अर्थ को स्पष्ट करने के लिए साथ आते हैं। अनुशासन प्रिय उदार व्यक्ति के बारे में 'कोमल किन्तु कठोर' का प्रयोग होता है। यहाँ दोनों शब्द विलोम होते हुए भी एक ही अर्थ को प्रकट करते हैं। 'बल्कि .... भी', 'न केवल' आदि प्रयोग पर्याय, विलोम, नकार-शब्द आदि कई संबंधों को प्रकट करते हैं।

विलोमों का विवेचन शब्द-निर्माण और प्रयोग की प्रक्रिया को समझने में बहुत ही उपयोगी है। विलोम शब्द एक अर्थ के दोनों पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं, जो परस्पर संबद्ध हैं। यह संबंध मानव के वैचारिक उद्‌भाव से प्रेरित है। अर्थात्, विलोम शब्द अर्थ के दो पहलुओं का आपस में वितरण कर लेते हैं। यदि किसी भाषा में किसी संदर्भ में विलोम नहीं मिले, तो दूसरी भाषा के दो विलोम शब्दों की तुलना में उसकी शब्द-रचना और वाक्य-रचना पर असर पड़ेगा। जैसे—वियोग, पुण्य, पूर्ण आदि का विलोम दिया जा सकता है।

(10) सन्धि-विच्छेद—जैसे—अत्यधिक, इत्यादि आदि शब्दों को समझाने के लिए।

(11) समास-विग्रह—जैसे—दशानन, राजपुरुष आदि शब्दों को समझाने के लिए।

(12) शब्द-विश्लेषण—यदि हिन्दी बंगला के भिन्नार्थी समान शब्दों का विश्लेषण किया जाये, तो वहाँ 'खाना' और 'पीना' शब्दों का अर्थ उनके अपनी भाषा के सहसम्बन्धों के आधार पर निकालना होगा। बिना सहसंबंध को जाने यदि हम बंगला के प्रयोग का अर्थ हिन्दी में करें—चाय खाना, तो यह अटपटा होगा। उस भाषा का वितरण शब्द के उपयोग के क्षेत्र को निर्धारित कर देता है। यहाँ भाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होगा कि इनमें कोई भाषा दूसरी भाषा के साथ पूर्ण साम्य नहीं रखती। मलयालम भाषा अंग्रेजी की ही तरह सामान्य रूप से त्रिगुणी विभाजन करती है—खाना, पीना और धूम्रपान। इससे पता चलता है कि यह विभाजन देश या प्रदेश की सीमा को आधार नहीं बनाता, बल्कि भाषा बोलने वालों के अनुभव, व्यवहार और परम्परा को आधार मानता है। ये बातें भाषा सीखने में बहुत महत्त्व रखती हैं, फिर भी सामान्य रूप से अच्छे शब्द कोशों में भी इन सूक्ष्मताओं की उपेक्षा की जाती है।

(13) शब्दान्वयन—यह शब्द अर्थ संबंध की वह प्रक्रिया है, जिसमें अर्थ के प्रकट करने में एक से अधिक शब्द आते हैं। ऐसे कई शब्दों में दोनों शब्दों का एक-दूसरे से संबंध पहले से ही निश्चित होता है और उनके स्थान पर अन्य शब्द नहीं आ सकते। दोनों शब्दों का अर्थ (या दो अर्थ ?) उनके योग में ही भासित होता है। यह प्रक्रिया ही शब्द की परिभाषा में समस्या बनकर आती है। 'स्वीकार करना' दो शब्द एक अर्थ है या एक शब्द एक अर्थ, यह समस्या है।

(14) अर्थ-कथन—कभी-कभी किसी युक्ति का आश्रय न लेकर सीधे अर्थ बता दिया जाता है, जैसे—प्रयत्न = कोशिश।

(15) वाक्य-प्रयोग—जैसे—वृतान्त, मूर्छित आदि शब्दों को वाक्य में प्रयोग करके समझाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण – 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

गद्य-पाठ और द्रुत-पाठ

गद्य-पाठों में से कुछ पाठ ऐसे होते हैं जिनका सूक्ष्म अध्ययन करने की आवश्यकता पड़ती है। जिन पाठों का सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक होता है, उनका मुख्य उद्देश्य भाषा-शिक्षण है। इन पाठों का बड़ी गम्भीरता से अध्ययन किया जाता है। इनके एक-एक शब्दों, वाक्यांशों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों को समझना पड़ता है। इनके शब्दों को स्पष्ट करने के लिए अध्यापक विभिन्न युक्तियों को प्रयुक्त करता है। इनके अर्थ की व्यवस्था भी होती है। इनका अर्थ समझकर छात्र इनका भावार्थ या सारांश भी लिखता है। इन सूक्ष्म पाठों के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. छात्रों को विभिन्न प्रकार के पाठों की शिक्षा देकर उन्हें बहुज्ञ बनाना।
2. उनके शब्द-भण्डार में वृद्धि करना।
3. उनके सूक्ति-भण्डार में वृद्धि करना और उन्हें कहावतों तथा मुहावरों से परिचित कराकर प्रयोग की क्षमता प्रदान करना।

Scanned with CamScanner

4. उन्हें व्याकरण-सम्मत भाषा के प्रयोग की शिक्षा देना।

5. उन्हें गद्य की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।

सूक्ष्म पाठों के अतिरिक्त कुछ पाठ ऐसे भी होते हैं, जिनके गहन अध्ययन की आवश्यकता नहीं पड़ती। ये पाठ सरल होते हैं। इनकी शब्दावली छात्र के लिए परिचित होती है। अतः इसके अध्ययन में प्रत्येक शब्द की व्याख्या की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसका अध्ययन शीघ्रता से होता है। शीघ्र पठन के लिए मौन पठन अधिक उपयुक्त होता है अतः द्रुत पाठ में मौन वाचन का विशेष महत्त्व है। इसमें विषय का बोध ही मुख्य शिक्षण बिन्दु है, न कि भाषा-ज्ञान। संक्षेप में द्रुत पाठ-शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. छात्रों को वाचन में गति लाने का अभ्यास देना।
2. उन्हें मौन वाचन का विशेष अभ्यास देना।
3. उन्हें विषय-वस्तु का बोध करने की क्षमता प्रदान करना।
4. उनमें सहायक पुस्तकों को पढ़ने की रुचि जागृत करना जिससे साहित्यिक अभिरुचि का विकास हो सके।
5. उन्हें स्वस्थ मनोरंजन की ओर उन्मुख करना जिससे अवकाश के क्षणों में पढ़कर मनोरंजन प्राप्त कर सकें।
6. उन्हें स्वतन्त्र अध्ययन के लिए प्रोत्साहन देना।

गद्य-शिक्षण में दोनों प्रकार के पाठों का महत्त्व है। सूक्ष्म पाठों द्वारा भाषा-ज्ञान की विशेष अभिवृद्धि होती है और उनमें भाषा-कार्य का विशेष महत्त्व है।

द्रुत-पाठ शिक्षण का एक उदाहरण

उद्देश्य—1. राष्ट्र-प्रेम के महत्त्व से अवगत कराना।

2. सहकारिता, स्नेह, त्याग आदि मूल्यों की प्रतिष्ठा का बोध कराना।

अपेक्षित परिवर्तन—1. बालक सहनशीलता एवं धैर्य का व्यावहारिक प्रयोग अपने जीवन में करेंगे।

2. समता, स्नेह, भ्रातृत्व सदृश उदात्त भावनाओं को महत्त्व देते हुए विभिन्न वर्गों एवं जातियों के प्रति स्नेह का व्यवहार करेंगे।

पाठ्य-सामग्री—

भारतीय संस्कृति—"गाँधी युग" (1920 - 47)

"मैं भारत में ऐसा राज्य"..............विकेन्द्रीकरण की प्रधानता होगी।

शिक्षक के लिए संकेत—निम्नांकित तथ्यों पर विशेष ध्यान दें—

1. देश के प्रति प्रेम जागरण।
2. वर्ग-विहीन समाज का निर्माण एवं सभी सम्प्रदायों से स्नेह।
3. सर्वोदय—समस्त वर्गों का विकास।
4. पारस्परिक प्रेम का महत्त्व एवं शोषण उन्मुक्त समाज की रचना।
5. बलवान द्वारा निर्बलों की रक्षा की भावना।
6. राजनैतिक एवं आर्थिक विकेन्द्रीकरण का महत्त्व।

उपरोक्त संकेतों को दृष्टिगत रखते हुये, शिक्षक 'प्रश्न' एवं 'कथन' के द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना छात्रों में जागृत करे। यथास्थान उपयुक्त चित्रों एवं शिक्षण के अन्य साधनों को प्रयुक्त करे। उदाहरणार्थ—

प्रश्न 1. देश-प्रेम का क्या अर्थ है ? (अपने देश से प्रेम)

प्रश्न 2. तुम किस देश के निवासी हो ? (भारतवर्ष)

शिक्षक द्वारा कथन—हमारा जन्म जिस देश में होता है और जहाँ पर हमारा लालन-पालन होता है, उस देश के प्रति हमारा प्रेम होता है। भारतवर्ष हमारा देश है अतएव उसके प्रति हमारा प्रेम होना स्वाभाविक है।

प्रश्न 3. वर्ग-विहीन समाज का क्या अर्थ है ? (जिसमें वर्ग भेद न हो)

प्रश्न 4. भारतीय समाज वर्गों में क्यों विभाजित है ?

(धर्म, जाति, प्रान्तीयता, शिक्षा, अर्थ इत्यादि के कारण)

प्रश्न 5. भारत के सभी सम्प्रदायों के व्यक्तियों को कैसे रहना चाहिये ? (मिल-जुलकर रहना चाहिये)

प्रश्न 6. राष्ट्रीय एकता की कौन-सी भावना बाधक है ? (छुआछूत की)

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण नं A

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी - गद्य का विकास
c. गद्य - शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य - पाठ और श्रुत - पाठ
e. गद्य - पाठ के रूप
f. गद्य - पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य - पाठ
h. गद्य की पाठ्य - पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास - साहित्य का विकास
e. उपन्यास - शिक्षण
f. उपन्यास - शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास - शिक्षण विधि
h. शिक्षण - क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी - नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक - शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक - शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक - शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

गद्य-पाठ के रूप

गद्य-पाठ विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। उनके निम्न प्रकारों पर विशेष ध्यान दिया जाता है—

1. सूचनात्मक, 2. वर्णनात्मक, 3. विचारात्मक, 4. भावात्मक।

(1) सूचनात्मक गद्य-पाठ—इसमें विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ रहती हैं जो दैनिक जीवन में हमारे लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध होती हैं। ये सूचनाएँ अनेक प्रकार की होती हैं। सभ्यता, संस्कृति, बीमारी, यात्रा, पर्व, तीर्थ-स्थान, वैज्ञानिक अन्वेषण आदि से सम्बद्ध सूचनाओं के आधार पर हम अपने आचरण को सरल व समाजोपयोगी बना सकते हैं।

(2) वर्णनात्मक गद्य-पाठ—वर्णनात्मक गद्य-पाठों में यात्रा, प्राकृतिक दृश्य, युद्ध आदि का वर्णन होता है जिनके आधार पर हम वर्णन करने की कला का विकास करते हैं।

(3) विचारात्मक गद्य-पाठ—सूर, तुलसी, कालिदास, 'सभ्यता व संस्कृति', 'मानव और समाज' आदि विषयों पर आलोचनात्मक निबन्ध हमारे मानसिक विकास में सहायक होते हैं।

(4) भावात्मक गद्य-पाठ—रामलीला, दीनों पर प्रेम आदि पाठ छात्रों के हृदय को छूते हैं। 'ताज', 'फतेहपुर सीकरी' जैसे गद्य-काव्य भावनात्मक पाठ ही हैं। इनके शिक्षण से छात्रों को भावात्मक निबन्ध लिखने की शैली से परिचित कराना सरल होता है।

गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध

शब्द और अर्थ के संबंध में तर्कशास्त्र और मनोविज्ञान के विद्वानों ने आधुनिक काल में विचार किया है। वे प्रतीक और उससे व्यक्त किसी वस्तु या विचार के संबंध के परम्परात्मक दृष्टिकोण की जगह प्रतीक विज्ञान की नयीं परिभाषा अपनाने के पक्ष में हैं। इन विद्वानों की नयी परिभाषा भी व्यवहार से ही प्रेरित है। लेकिन व्यवहार का सीधा संबंध शब्द से नहीं, बल्कि शब्द से व्यक्त होने वाली वस्तु के विचार से है। ऑग्डन और रिचर्ड्स प्रतीक, वस्तु और प्रेषण-क्रिया का विवेचन प्रस्तुत करते हैं। इससे समझा जा सकता है कि शब्द विज्ञान के संदर्भ में इन तीनों बातों का वर्णन किया जाता है—वह संस्कृति, जिसकी अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है, भाषा की अर्थ-संरचना और इसे व्यक्त करने में शब्दों का कार्य। जब इन तीनों का स्वरूप स्पष्ट हो सके तो शब्द विज्ञान का स्वरूप निश्चित हो सकेगा।

अर्थ के संबंध में विविध सिद्धान्त प्रचलित हैं। इस पर तनिक विचार करें।

शब्द-अर्थ के सीधे संबंध का परम्परावादी दृष्टिकोण बाद के चिंतकों द्वारा नकारा गया। उन्होंने दिखाने का यत्न कियां कि अर्थ सीधे शब्द से नहीं निकलता, बल्कि बोलने वाले के मन में प्रत्यय के रूप में या अर्थ-धारण के रूप में निहित होता है। उन्होंने शब्द-अर्थ के प्रत्यक्ष संबंध की असंभाव्यता के पक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किये हैं।

इन सिद्धान्तों में प्रत्ययात्मक दृष्टिकोण प्रमुख है। भाषा में शब्दार्थ के अतिरिक्त एक आंतरिक अर्थ होता है, जो एक रहस्यात्मक स्थिति है। शब्द प्रत्यय और उच्चरित रूप का समंजस है। स्वीट ने सबसे पहले प्रतीक के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया और प्रतीक विज्ञान के प्रारंभिक विचार प्रकट किये। लेकिन गहन चिन्तन के अभाव के कारण इनका प्रतीक विज्ञान स्पष्ट नहीं हो सका और आगे ऑग्डन और रिचर्ड्स ने ही इसे रूप दिया। प्रतीक, इनके अनुसार प्रत्यय और शब्द का समन्वित रूप है। समस्त भाषा ही व्यवस्थित विचार-प्रवाह है, जो ध्वनियों में प्रकट होता है। प्रतीकों के अभाव में विचारों का विभेद असम्भव होता है।

ऑग्डन और रिचर्ड्स ने सबसे पहले शब्द में अर्थ के अस्तित्व के जादू को तोड़ा और यह प्रतिपादित किया कि असली अर्थ वक्ता में ही निहित है। इनके अनुसार शब्द और अर्थ के बीच में अर्थ-बोध का तीसरा कोण भी है। इन तीनों में शब्द का अर्थ-बोध के साथ संबंध है और वस्तु के साथ वक्ता का। अर्थ का प्रतिपादन वहाँ होता है, जहाँ कोई प्रतीक मन में किसी प्रसंग का अंग हो। इस प्रकार वस्तु और अभिव्यक्ति दोनों को अभिव्यक्त करने की व्यक्ति की क्रिया हमेशा चलती रहती है। इनका अर्थ का विश्लेषण प्रायः दर्शन और तर्कशास्त्र पर आधारित है। प्रतीकात्मकता (symbolism) के सिद्धान्तों की चर्चा करते हुए इन्होंनें भाषा के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है और कहा है कि प्रतीक केवल एक अर्थ के लिए आते हैं, इनका भाषा के गठन में विशेष स्थान है, भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है।

ब्लूमफील्ड का व्यवहारवादी सिद्धान्त शब्दार्थ को प्रेरणा और प्रतिक्रिया की शृंखला में व्यक्त देखता है। इस सिद्धान्त के अनुसार सारी मनुष्य की क्रियाएँ कारण-कार्य के क्रम की एक शृंखला हैं। भाषा भी एक मनुष्य व्यवहार है। इस कारण भाषा में अर्थ संप्रेषण इसी क्रम में चलता है।

Scanned with CamScanner

फर्थ भाषा को अर्थपूर्ण मनुष्य-व्यवहार मानते हैं और हम इससे न मन को, न परिस्थितियों को दूर रख सकते हैं। उनका सिद्धान्त बहुव्यवस्थात्मक माना जाता है, क्योंकि भाषा ध्वनि, व्याकरण आदि कई संबद्ध व्यवस्थाओं से निर्मित पूर्ण व्यवस्था है। इन व्यवस्थाओं में व्याकरणिक व्यवस्थाओं को बाह्य परिस्थितियों से अर्थ ही जोड़ता है। इस कारण अर्थ सभी व्यवस्थाओं में व्याप्त बाह्य परिस्थितियों में सार्थक अंग है। उनके अनुसार भाषा का रूप और अर्थ अभिन्न हैं, एक हैं। इस कारण उनका सिद्धान्त एकात्मक सिद्धान्त माना जाता है।

चॉम्स्की का रूपांतरण रचना सिद्धान्त भाषा के तीन तत्व मानता है—ध्वनि, वाक्य और अर्थ। उनका सिद्धान्त अर्थ पर ही आधारित है, यद्यपि अर्थ की विशेष चर्चा नहीं की गयी है। भाषा की रूप-रचना में सार्थक, स्वीकार्य वाक्यों को ही आधार बनाया गया है। भाषा बोलने वाला सार्थक वाक्यों की ही रचना करता है, यद्यपि बिना अर्थ के व्याकरण-सम्मत वाक्यों की रचना भी हो सकती है।

रूपांतरण के सिद्धान्त में अर्थ के महत्त्व के बारे में आधुनिकतम विचार सामने आये हैं। जैसा कि कहा जा चुका है, चॉम्स्की अर्थ को गौण महत्त्व ही देते हैं। अर्थ केवल वाक्य विज्ञान को स्पष्ट करने के लिए है और अर्थ के कारण कई संभव वाक्य नकारे जाते हैं। इस प्रकार अर्थ वाक्यों में प्रकट हो रहे गणितीय या तर्कशास्त्रीय रूप-रचना को स्पष्ट करता है और वाक्य-रचना में हमेशा पीछे रहता है। इस कारण चॉम्स्की ने अर्थ का अलग से कोई वर्णन या विश्लेषण नहीं किया।

सपीर और वोर्फ का अर्थ संबंधी सिद्धान्त समाजशास्त्रीय है। सतीर मानते हैं कि भाषा मानसिक क्रिया को प्रभावित करती है और चिंतन को दिशा देती है। भाषा स्वायत्त, सर्जनात्मक और प्रतीकात्मक गठन है और अपनी रूपगत पूर्णता के कारण हमारे अनुभवों को रूप देती है, उन्हें कम या अधिक कर देती है। वोर्फ मानते हैं कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, वह हमारे चिंतन, विचारों की नियंता है, जो हमारी मानसिक क्रियाओं को दिशा देती है। मनुष्य की अन्य क्रियाओं की तरह भाषा भी एक क्रिया है।

अर्थ सम्बन्धी विभिन्न संप्रदायों के तथ्यों के अवलोकन से एक बात स्पष्ट होती है। विद्वानों ने कोश-शब्द और इसके अर्थों की चर्चा कम की है, शब्द और अर्थ के संबंधों के बारे में ही विस्तार में विचार किया है। लगभग सभी विद्वान् भाषा की संरचना और भाषाओं के वर्णन के लिए उचित व्याकरण-व्यवस्था के संबंध में ही अर्थ पर विचार किया है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण – 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध

शब्द और अर्थ के संबंध में तर्कशास्त्र और मनोविज्ञान के विद्वानों ने आधुनिक काल में विचार किया है। वे प्रतीक और उससे व्यक्त किसी वस्तु या विचार के संबंध के परम्परात्मक दृष्टिकोण की जगह प्रतीक विज्ञान की नयी परिभाषा अपनाने के पक्ष में हैं। इन विद्वानों की नयी परिभाषा भी व्यवहार से ही प्रेरित है। लेकिन व्यवहार का सीधा संबंध शब्द से नहीं, बल्कि शब्द से व्यक्त होने वाली वस्तु के विचार से है। ऑग्डन और रिचर्ड्स प्रतीक, वस्तु और प्रेषण-क्रिया का विवेचन प्रस्तुत करते हैं। इससे समझा जा सकता है कि शब्द विज्ञान के संदर्भ में इन तीनों बातों का वर्णन किया जाता है—वह संस्कृति, जिसकी अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है, भाषा की अर्थ-संरचना और इसे व्यक्त करने में शब्दों का कार्य। जब इन तीनों का स्वरूप स्पष्ट हो सके तो शब्द विज्ञान का स्वरूप निश्चित हो सकेगा।

अर्थ के संबंध में विविध सिद्धान्त प्रचलित हैं। इस पर तनिक विचार करें।

शब्द-अर्थ के सीधे संबंध का परम्परावादी दृष्टिकोण बाद के चिंतकों द्वारा नकारा गया। उन्होंने दिखाने का यत्न किया कि अर्थ सीधे शब्द से नहीं निकलता, बल्कि बोलने वाले के मन में प्रत्यय के रूप में या अर्थ-धारण के रूप में निहित होता है। उन्होंने शब्द-अर्थ के प्रत्यक्ष संबंध की असंभाव्यता के पक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किये हैं।

इन सिद्धान्तों में प्रत्ययात्मक दृष्टिकोण प्रमुख है। भाषा में शब्दार्थ के अतिरिक्त एक आंतरिक अर्थ होता है, जो एक रहस्यात्मक स्थिति है। शब्द प्रत्यय और उच्चरित रूप का समंजस है। स्वीट ने सबसे पहले प्रतीक के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया और प्रतीक विज्ञान के प्रारंभिक विचार प्रकट किये। लेकिन गहन चिन्तन के अभाव के कारण इनका प्रतीक विज्ञान स्पष्ट नहीं हो सका और आगे ऑग्डन और रिचर्ड्स ने ही इसे रूप दिया। प्रतीक, इनके अनुसार प्रत्यय और शब्द का समन्वित रूप है। समस्त भाषा ही व्यवस्थित विचार-प्रवाह है, जो ध्वनियों में प्रकट होता है। प्रतीकों के अभाव में विचारों का विभेद असम्भव होता है।

ऑग्डन और रिचर्ड्स ने सबसे पहले शब्द में अर्थ के अस्तित्व के जादू को तोड़ा और यह प्रतिपादित किया कि असली अर्थ वक्ता में ही निहित है। इनके अनुसार शब्द और अर्थ के बीच में अर्थ-बोध का तीसरा कोण भी है। इन तीनों में शब्द का अर्थ-बोध के साथ संबंध है और वस्तु के साथ वक्ता का। अर्थ का प्रतिपादन वहाँ होता है, जहाँ कोई प्रतीक मन में किसी प्रसंग का अंग हो। इस प्रकार वस्तु और अभिव्यक्ति दोनों को अभिव्यक्त करने की व्यक्ति की क्रिया हमेशा चलती रहती है। इनका अर्थ का विश्लेषण प्रायः दर्शन और तर्कशास्त्र पर आधारित है। प्रतीकात्मकता (symbolism) के सिद्धान्तों की चर्चा करते हुए इन्होंनें भाषा के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है और कहा है कि प्रतीक केवल एक अर्थ के लिए आते हैं, इनका भाषा के गठन में विशेष स्थान है, भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है।

ब्लूमफील्ड का व्यवहारवादी सिद्धान्त शब्दार्थ को प्रेरणा और प्रतिक्रिया की शृंखला में व्यक्त देखता है। इस सिद्धान्त के अनुसार सारी मनुष्य की क्रियाएँ कारण-कार्य के क्रम की एक शृंखला हैं। भाषा भी एक मनुष्य व्यवहार है। इस कारण भाषा में अर्थ संप्रेषण इसी क्रम में चलता है।

Scanned with CamScanner

फर्थ भाषा को अर्थपूर्ण मनुष्य-व्यवहार मानते हैं और हम इससे न मन को, न परिस्थितियों को दूर रख सकते हैं। उनका सिद्धान्त बहुव्यवस्थात्मक माना जाता है, क्योंकि भाषा ध्वनि, व्याकरण आदि कई संबद्ध व्यवस्थाओं से निर्मित पूर्ण व्यवस्था है। इन व्यवस्थाओं में व्याकरणिक व्यवस्थाओं को बाह्य परिस्थितियों से अर्थ ही जोड़ता है। इस कारण अर्थ सभी व्यवस्थाओं में व्याप्त बाह्य परिस्थितियों में सार्थक अंग है। उनके अनुसार भाषा का रूप और अर्थ अभिन्न हैं, एक हैं। इस कारण उनका सिद्धान्त एकात्मक सिद्धान्त माना जाता है।

चॉम्स्की का रूपांतरण रचना सिद्धान्त भाषा के तीन तत्त्व मानता है—ध्वनि, वाक्य और अर्थ। उनका सिद्धान्त अर्थ पर ही आधारित है, यद्यपि अर्थ की विशेष चर्चा नहीं की गयी है। भाषा की रूप-रचना में सार्थक, स्वीकार्य वाक्यों को ही आधार बनाया गया है। भाषा बोलने वाला सार्थक वाक्यों की ही रचना करता है, यद्यपि बिना अर्थ के व्याकरण-सम्मत वाक्यों की रचना भी हो सकती है।

रूपांतरण के सिद्धान्त में अर्थ के महत्त्व के बारे में आधुनिकतम विचार सामने आये हैं। जैसा कि कहा जा चुका है, चॉम्स्की अर्थ को गौण महत्त्व ही देते हैं। अर्थ केवल वाक्य विज्ञान को स्पष्ट करने के लिए है और अर्थ के कारण कई संभव वाक्य नकारे जाते हैं। इस प्रकार अर्थ वाक्यों में प्रकट हो रहे गणितीय या तर्कशास्त्रीय रूप-रचना को स्पष्ट करता है और वाक्य-रचना में हमेशा पीछे रहता है। इस कारण चॉम्स्की ने अर्थ का अलग से कोई वर्णन या विश्लेषण नहीं किया।

सपीर और वोर्फ का अर्थ संबंधी सिद्धान्त समाजशास्त्रीय है। सतीर मानते हैं कि भाषा मानसिक क्रिया को प्रभावित करती है और चिंतन को दिशा देती है। भाषा स्वायत्त, सर्जनात्मक और प्रतीकात्मक गठन है और अपनी रूपगत पूर्णता के कारण हमारे अनुभवों को रूप देती है, उन्हें कम या अधिक कर देती है। वोर्फ मानते हैं कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, वह हमारे चिंतन, विचारों की नियंता है, जो हमारी मानसिक क्रियाओं को दिशा देती है। मनुष्य की अन्य क्रियाओं की तरह भाषा भी एक क्रिया है।

अर्थ सम्बन्धी विभिन्न संप्रदायों के तथ्यों के अवलोकन से एक बात स्पष्ट होती है। विद्वानों ने कोश-शब्द और इसके अर्थों की चर्चा कम की है, शब्द और अर्थ के संबंधों के बारे में ही विस्तार में विचार किया है। लगभग सभी विद्वान् भाषा की संरचना और भाषाओं के वर्णन के लिए उचित व्याकरण-व्यवस्था के संबंध में ही अर्थ पर विचार किया है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण → A

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी - गद्य का विकास
c. गद्य - शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य - पाठ और द्रुत - पाठ
e. गद्य - पाठ के रूप
f. गद्य - पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य - पाठ
h. गद्य की - पाठ्य - पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास - साहित्य का विकास
e. उपन्यास - शिक्षण
f. उपन्यास - शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास - शिक्षण विधि
h. शिक्षण - क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी - नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक - शिक्षण के उद्देश्य,
f. नाटक - शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक - शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

गद्य-शिक्षण के उद्देश्य

भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों में एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि छात्रों की विचार-शक्ति में वृद्धि हो और अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकें तथा विभिन्न साहित्यकारों द्वारा व्यक्त विचारों को सरलता से ग्रहण कर सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गद्य-शिक्षण प्रभावी साधन है।

गद्य-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. छात्रों के वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों के उच्चारण में शुद्धता उत्पन्न करना।
2. उनके विचारों तथा शब्दों, रूढ़ोक्तियों, लोकोक्तियाँ, सूक्तियों एवं कथाओं के कोष का क्रमशः विस्तार करना।
3. चिन्तन में क्रमशः स्पष्टता, संगतता एवं क्रमबद्धता उत्पन्न करना।
4. वाक्य में प्रयुक्त शब्द-रूपों की शुद्धता और अशुद्धता समझने की स्तरोचित योग्यता उत्पन्न करना।
5. छात्रों को सुन्दर गद्यात्मक उद्धरणों के संकलन की प्रेरणा देना।
6. छात्रों के हृदय में भाषा-विषयक शुद्धता के प्रति गम्भीर सावधानी का भाव उत्पन्न करना।
7. ज्ञान-क्षेत्र एवं विवेक के विकास द्वारा चरित्र-चित्रण करना।
8. विभिन्न लेखन-शैलियों का परिचय कराके लेखन-शैली के विकास में उनकी सहायता करना।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि गद्य-शिक्षण के माध्यम से छात्रों के शब्द व सूक्ति भण्डार में वृद्धि करना, उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करने की योग्यता उत्पन्न करना, छात्रों की विचार-शक्ति में वृद्धि करना एवं विभिन्न लेखन-शैलियों से परिचित कराना गद्य-शिक्षण के उल्लेखनीय सामान्य उद्देश्य हैं।

सामान्य उद्देश्यों के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट उद्देश्य भी होते हैं। विद्यालय में जो गद्य-पाठ पढ़ाये जाते हैं, उनमें कुछ पाठ विचारात्मक होते हैं तो कुछ सूचनात्मक, कुछ वर्णनात्मक, कुछ भावात्मक, कुछ कथात्मक तथा कुछ चरित्र-निर्माणात्मक होते हैं। कुछ पाठ व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित होते हैं। कुछ अन्य पाठ वैज्ञानिक, भौगोलिक अथवा ऐतिहासिक विषयों पर आधारित होते हैं। इन पाठों के अपने विशिष्ट उद्देश्य होते हैं।

कहने का तात्पर्य है कि प्रत्येक पाठ का मुख्य विशिष्ट उद्देश्य गद्य-पाठ में ही निहित होता है।

Scanned with CamScanner